RESEARCH PAPER | Literature | Volume : 2 | Issue : 2 | November 2012 | ISSN - 2249-555X

चन्द्रविजय प्रबन्ध का प्रकृति–चित्रण
Chandravijay Prabandh Ka Prakruti Chitran

KEYWORDS

Dr. Ramandeep Kaur

सहायक आचार्य (संस्कृत) राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सैक्टर–46

ABSTRACT प्रकृति वह आधारभूमि है जिस पर संस्कृत साहित्य का विराट् प्रासाद अवस्थित है। मूल रूप में प्रकृति संस्कृत काव्य का सहज अवयव थी परन्तु कालान्तर में उसकी स्वाभाविकता लुप्त होती गयी। सहजता का स्थान अलंकरण ने ले लिया और प्रकृति चित्रण एक रूढ़ि बन कर रह गया। मण्डपदुर्ग के कवि प्रधानमन्त्री मण्डन द्वारा रचित 'चन्द्रविजयप्रबन्ध'1दो पटलों में विभाजित एक लघु कृति है। इसका प्रतिपाद्य प्रकृतिचित्रण है। मण्डन ने चन्द्रोदय का अतीव मनोरम वर्णन किया है जो विविध अलंकारों तथा कल्पनाओं पर आधारित होता हुआ भी जटिलता से मुक्त है। चन्द्रोदय की चिरप्रतिष्ठित परम्परा मण्डन की कल्पना का स्पर्श पाकर काव्य में नवीनता से स्पन्दित हो गयी है।

संस्कृत साहित्य प्रकृति के प्रांगण में विकसित हुआ है। वस्तुतः प्रकृति वह आध ारभूमि है जिस पर संस्कृत साहित्य का विराट् प्रासाद अवस्थित है। काव्याचार्यों ने प्रकृति को काव्य के बृहत्तम रूप 'महाकाव्य' का अनिवार्य तत्त्व मानकर प्रकृति के गौरव तथा उनके पारस्परिक सम्बन्ध की गहनता को स्वीकार किया है। मूल रूप में प्रकृति संस्कृत काव्य का सहज अवयव थी परन्तु कालान्तर में उसकी स्वाभाविकता लुप्त होती गयी। सहजता का स्थान अलंकरण ने ले लिया और प्रकृति चित्रण एक रूढ़ि बन कर रह गया। प्रकृति के प्रति वाल्मीकि तथा कालिदास जैसा निश्छल अनुराग परवर्ती संस्कृत कवियों में दिखाई नहीं देता है। वाल्मीकि ने जहाँ प्रकृति के आलम्बन रूप को अधिक महत्त्व दिया है, वहाँ कालिदास ने उसे विविध अलंकरण–सामग्री से सुसज्जित कर महारानी का सा रूप दे दिया है। कालिदासोत्तर महाकाव्यों के प्रकृति–चित्रण में स्वाभाविकता की कमी है। इनमें अधिकतर उक्ति–वैचित्र्य को प्रकृति–वर्णन का आधार बनाया गया है। फलतः भारवि, माघ श्रीहर्ष आदि पिछले खेवे के कलावादी कवियों का प्रकृति–चित्रण यमक–श्लेष की शाब्दीक्रीडा तथा दूरारूढ़ कल्पनाओं द्वारा विद्वत्ताप्रदर्शन का साधन बनकर रह गया है।

मण्डपदुर्ग के कवि प्रधानमन्त्री मण्डन द्वारा रचित 'चन्द्रविजयप्रबन्ध'[1]दो पटलों में विभाजित एक लघु कृति है। इसका प्रतिपाद्य प्रकृतिचित्रण है। मण्डन का प्रकृति–चित्रण (चन्द्रोदयवर्णन) यद्यपि प्रकृति–चित्रण की परवर्ती शैली से प्रभा. वित है, किन्तु वह न यमक से आच्छादित है, न उसमें दूरारूढ़ अप्रस्तुतों का निवेश है और न वह क्लिष्ट कल्पनाओं से आक्रान्त है। मण्डन ने चन्द्रोदय का अतीव मनोरम वर्णन किया है जो विविध अलंकारों तथा कल्पनाओं पर आधारित होता हुआ भी जटिलता से मुक्त है। इसके प्रथम पटल में चन्द्रोदय से चन्द्र. ास्त तक चन्द्रमा की विविध अवस्थाओं का चारु चित्रण किया गया है। द्वितीय पटल में चन्द्रोदय को सूर्य तथा चन्द्रमा के प्रतीकात्मक युद्ध के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें चन्द्रमा विजय होती है। चन्द्रमा को विजय के फलस्वरूप रजनी–रमणी का हाथ प्राप्त होता है। चन्द्रोदय की चिरप्रतिष्ठित परम्परा मण्डन की कल्पना का स्पर्श पाकर काव्य में नवीनता से स्पन्दित हो गयी है।

प्रथम पटल के चन्द्रोदय–वर्णन में कवि ने विविध अलंकारों के द्वारा प्रकृति का कल्पनापूर्ण चित्रण किया है। कला के रूप में प्रकट हुआ चन्द्रमा प्राची के मस्तक के समान शोभित है तथा उसमें स्थित कलंक–रेखा कस्तूरिका–चिह्न के समान प्रतीत होती है। [2] उत्तरोत्तर वृद्धिगत होते हए समग्र कलाओं से युक्त चन्द्रमण डल भगवान् विष्णु के चक्र , ऐन्द्री दिशा रूपी नायिका के मुक्तामय कर्णाभूषण, कामदेव के आतपत्र तथा जगत्त्रयी के दर्पण के समान सुशोभित हुआ। [3] चन्द. ास्त के वर्णन में कवि ने प्रकृति पर मानवीय कार्यकलापों का आरोप किया है। विलासी चन्द्रमा सूर्य की अनुपस्थिति में उसके अन्तःपुर (पूर्वदिशा) में प्रविष्ट हो गया था। सूर्य को वापिस आता हुआ जानकर वह पश्चिम दिशा में भाग गया। परन्तु दुर्भाग्य ने वहाँ भी उसका पीछा नहीं छोड़ा। पश्चिम दिशा ने उसके प्रति वेश्या के समान आचरण किया तथा उसके समस्त ऐश्वर्य को लूटकर अपने घर से निकाल दिया। [4] अन्ततः उसके शत्रु सूर्य ने किरणों के प्रहार से उसे अस्ताचल के शिखर से पश्चिमी सागर में धकेल दिया। [5] चन्द्रमा के पतन से खिन्न होकर कवि ने उसकी विजय का वर्णन करने की इच्छा से प्रबन्ध के द्वि तीय भाग की रचना आरम्भ की।

चन्द्रविजयप्रबन्ध के प्रथम पटल का प्रकृति–वर्णन मुक्तक कोटि का है परन्तु

द्वितीय पटल में प्रबन्धात्मकता दिखाई देती है, भले ही वह कहीं–कहीं क्षीण हो। इसके आरम्भिक भाग में सूर्योदय तथा सूर्यास्त का अलंकृत शैली में वर्णन किया गया है। उदारवृत्ति सागर से उत्पन्न असाधुवृत्ति सूर्य उदयकाल में सौम्यता प्रदर्शित करने के पश्चात् अपनी प्रचण्ड किरणों से समस्त संसार को पीड़ित कर अन्ततः अस्ताचल में डूब गया। [6] सूर्य जहाँ दुर्गुणों (उष्ण किरणों) का भण्डार है, वहाँ सागर का कनिष्ठ पुत्र चन्द्रमा सद्गुणों (शीतल किरणों) का आगार है। चन्द्रमा के निर्मल आचरण से प्रसन्न पिता ने उसके लिए प्रदोष की पुत्री निशा का हाथ माँगा। परन्तु दुर्बुद्धि सूर्य ने निशा का मार्ग अवरुद्ध कर दिया। सूर्य द्व ारा निशा के अपहरण का समाचार पाकर चन्द्रमा ने तुरन्त अपने श्वसुर प्रदोष (सन्ध्याकाल) को उसकी तीक्ष्ण किरणों के प्रसार को रोकने के लिए भेज दिया तथा स्वयम् उदयाचल के शिखर पर आरूढ हो गया। [7] तारों रूपी सैनिकों के साथ आगे बढ़ते हुए चन्द्रमा को देखकर, 'वृद्ध' एवं 'वीतप्रताप' होता हुआ भी सूर्य युद्ध के लिए उद्यत हो गया। चन्द्रमा द्वारा छोड़े गए बाणों से सूर्य का शरीर क्षत–विक्षत हो गया तथा पश्चिम दिशा उसके रक्त से रंजित हो गयी। पराजित तेजानिधि अस्ताचल की चोटी से समुद्र में कूद गया। तदनन्तर काल रूपी पुरोहित ने विजयी चन्द्रमा का राज्याभिषेक किया। अन्तरिक्ष के वैवाहिक मण्डप में निशा–शशी का विवाह सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् भार्या रात्रि के साथ विहार करने का इच्छुक वह तारागणों रूपी कुसुमों से सुसज्जित आकाश के अन्तः पुर (मध्य) में प्रविष्ट हुआ। [8]

मण्डल प्रकृति का कुशल चित्रकार है। उसका प्रकृति–चित्रण प्राकृतिक

दृश्यों का आकलन मात्र नहीं है। वह सरसता से ओतप्रोत तथा कविकल्पना से तरलित है। चन्द्रविजयप्रबन्ध की प्रकृति आलम्बन–प्रधान है यद्यपि कहीं–कहीं उसके उद्दीपन पक्ष को भी उभारा गया है। काव्य में चन्द्रोद्रय, चन्द्रास्त, सूर्योदय तथा सूर्यास्त के अलकृत वर्णनों का बाहुल्य है। अलंकृत वर्णनों के अन्तर्गत कहीं विविध अलंकारों द्वारा प्रकृति के सहज बिम्बों को कलात्मक ढंग से ग्रहण किया जाता है, कहीं प्रकृति का मानवीकरण किया जाता है तथा कहीं उसके उद्दीपन रूप को पल्लवित किया जाता है। काव्य में प्रकृति–चित्रण की उक्त सभी श्रेणियाँ दृष्टिगत होती हैं यद्यपि प्रथम दो शैलियों में प्रकृति–चित्र अंकित करने में कवि का मन अधिक रमा है तथा इनमें ही उसकी काव्यप्रतिभा का उन्मेष हुआ है।

काव्य में बहुधा प्रकृति के आलम्बन रूप का चित्रण किया गया है परन्तु उसमें कवि ने विविध अलंकारों को आधार बनाया है। चन्द्रिका के प्रसार का प्रस्तुत वर्णन उपमा का परिधान पहनकर आया है। सघन अन्धकार में चन्द्रमा की मृणाल–तुल्य श्वेत किरणें फैल रही हैं। ऐसा प्रतीत होता है जैसे भगवान् शिवजी के जटाजूट पर मन्दाकिनी की निर्मल धाराएँ गिर रही हों।

मृणालगौरा मृगलांछनस्य सम्पर्कभाजस्तमसा मयूखाः ।
शम्भोः कपर्दोपगता इवासन् नभःस्रवन्त्या नववारिपूराः ।। 1.20

प्रस्तुत वर्णन की रोचकता का आधार भी उपमा है। चन्द्रमा का बिम्ब, तारों के साथ सागर में प्रतिबिम्बित हो रहा था। कवि को विश्वास है कि इस स्थिति में वह अपने भीतर से निस्सृत मोतियों से लिपटे विष्णु के शंख के समान है।

स तारकाभिः सह वार्द्धिमध्ये बिम्बं गतो व्यैक्षत शीतभानुः ।
शंखो हरेः पूर्वमिवाभिवीतो मुक्ताभिरात्मोदर–निर्गताभिः ।। 1.17

चन्द्रमा के उदित होते ही सागर आन्दोलित हो उठा तथा समुद्र में बिम्बित चन्द्रमा ने आवर्त्त के वेग से पूर्णता को धारण कर लिया हैं । आवर्त्त में घूमता हुआ चन्द्रबिम्ब ऐसा प्रतीत होता है मानो पिता (सागर) को प्राप्त कर वह हर्ष से नृत्य कर रहा हो। उत्प्रेक्षा के स्पर्श से आवर्त्त में बिम्बित चन्द्रमा का यह वर्णन रोचकता से भर गया है।

आवर्त्तवेगादमृतांशुरासीत् पयोधिमध्ये परिपूर्णमानः ।
प्राप्यास्तमासाद्य पुनः समक्षं पितुः प्रहर्षादिव जातनृत्तः ।। 1.12

मण्डन के कतिपय अलंकृत वर्णन बहुत अनूठे हैं। इनसे कवि की कमनीय कल्पना तथा शिल्पकौशल का परिचय मिलता है। सूर्यास्त के समय पश्चिम दिशा में छाई लालिमा के विषय में कवि की कल्पना है कि शशांक द्वारा छोड़े गए किरण–बाण ों से सूर्य का शरीर छिन्न–भिन्न हो गया है तथा उसके रक्त से आकाश का पश्चिमी भाग लाल हो गया है। पूर्वज्ञात होती हुई भी उत्प्रेक्षा वस्तुतः सुन्दर है।

Volume : 2 | Issue : 2 | November 2012 | ISSN - 2249-555X

मृगांकमुक्तैर्विशिखैर्मयूखैर्विकर्तनस्य विभिन्नमूर्ते : ।
आरंजितेवाम्रपरम्पराभिः पूर्वेतरा पुष्करभूमिरासीत् ।। 2.37

सांयकाल में पक्षी अपने –अपने निवासस्थलों की ओर प्रस्थान करते हैं। प्रस्तुत पद्य में उनकी तुलना मध्यस्थ पुरुषों से की गयी है, जो मानो युद्ध के लिये उद्यत सूर्य तथा चन्द्रमा में सन्धि कराने के प्रयत्न में इधर–उधर घूम रहे हैं। उपमा तथा उत्प्रेक्षा पर आधारित यह वर्णन निस्सन्देह मण्डन की रोचक कल्पना है।

समन्ततो व्योमनि संचरन्तः सायं विहंगाः स्वनिवासलोलाः ।
सन्धिं तयोः कर्त्तुमिव प्रवृत्ताः महाजना मध्यगता इवासन् ।। 2.32

उत्प्रेक्षा और समासोक्ति पर आधारित सूर्यास्त का निम्नांकित वर्णन भी कम रोचक नहीं है। अपने पति सूर्य को मृत देखकर उसकी साध्वी पत्नियाँ (किरणें) भी इस विचार से उसके साथ सती हो गयी हैं कि अगले जन्म में भी वही उन्हें पति के रूप में प्राप्त हो।

जाया भवामो जन्मान्तरे ऽपि भानोरितीवोढदृढानुरागाः।
रुचिं दिनेशे रुचयो दधाना द्रुवं वितेनुर्दहनप्रवेशम् ।। 2.45

मण्डन ने प्रकृति को मानवी रूप देने में अपनी निपुणता का परिचय दिया है। द्वितीय पटल का प्रकृति चित्रण आद्यन्त मानवीकरण पर आधारित है। इसमें सूर्यास्त तथा चन्द्रोदय को सूर्य तथा चन्द्रमा के प्रतीकात्मक युद्ध के रूप में चित्रित किया गया है। सूर्यास्त, चन्द्रोदय तथा रात्रि के आगमन का यह सम्मिलित चित्र मानवीकृत होकर सजीवता से स्पंदित हो गया है। कवि ने निशा को सन्ध्याकाल की पुत्री के रूप में चित्रित किया है। चन्द्रमा के साथ निशा का विवाह निश्चित होने पर सन्ध्याकाल निशा को उसके पति चन्द्रमा के हाथ सौंपने के लिए प्रस्थान करता है। परन्तु अस्तंगामी सूर्य अपनी किरणों के प्रसार से निशा का अपहरण कर लेता है। भावी पत्नी के हरण का वृत्तान्त सुनकर चन्द्रमा तुरन्त उदयाचल के शिखर पर स्थित होकर अंशु बाणों के प्रहार से सूर्य को आहत कर देता है। तेजहीन सूर्य अपमानित होकर पश्चिम सागर में कूद पड़ता है । सन्ध्याकाल निशा को चन्द्रमा को सौंप देता है तथा मांगलिक वेला में उन दोनों का विवाह सम्पन्न होता है। [9]

काव्य में प्रकृति के उद्दीपक रूप के चित्र अत्यल्प हैं। प्रोषितपतिका तरुणियों के लिए चन्द्रमा की किरणें कालकूट बन जाती हैं। खिड़कियों के रास्ते से भीतर आती हुई शीतल किरणें वियोगिनियों के मानस को उत्कण्ठित कर उन्हें मूर्च्छित कर देती हैं। [10]

प्रकृति के अनलंकृत स्वाभाविक चित्र अंकित करने में मण्डन की अधिक रुचि नहीं है। निम्नांकित पद्य में वर्णित सांयकालीन दृश्य सहजता के कारण उल्लेखनीय है।

तेजोनिधौ तिग्मकरेऽस्तभाजि नक्षत्रनाथे च नवाभिषिक्ते ।
मध्ये प्रवृद्धा महसा बभूवुर्मलीमसाः केऽपि महान्धकाराः ।। 2.53

काव्य का चन्द्रोदयवर्णन संस्कृत साहित्य में सम्मानित पद का अधिकारी है।

REFERENCE 1. श्रीहेमचन्द्राचार्य ग्रन्थावली, 10, श्रीहेमचन्द्राचार्य सभा, द्य पाटण (गुजरात), 1918 द्य 2. चन्द्रविजयप्रबन्ध , 1.6 द्य 3. वही, 1.14–15 द्य 4. वही, 1.37 द्य 5. वही, 1.40 द्य 6. वही, 2.3–10 द्य 7. वही, 2.24–27 द्य 8. वही, 2.84 द्य 9. वही, 2.23–24, 27, 38, 43, 60, 65 द्य 10. वही, 1.30–31